



सत्य धर्म प्रवेशिका SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग ८)

“जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी,
मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही
‘मैपन’ (एकत्व) करता है और
उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है।
यही सम्यग्दर्शन की विधि है।”

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेट

(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग जब अपने परिणामों की जिम्मेदारी तत्समय की योग्यता पर डाल देते हैं, तब वे अपने पुरुषार्थ को गौण कर देते हैं। जबकि अपने हाथ में केवल पुरुषार्थ ही है। अपने उचित पुरुषार्थ के बाद जो भी घटता है वह तत्समय की योग्यता कहलाता है।



When people push the responsibility for their inner disposition on destiny, they are undermining their own puruṣārtha. Only puruṣārtha is in our hands. So we must do the optimum puruṣārtha. Whatever takes place after we have done the optimum puruṣārtha is called destiny.

Pariṇāma — mood, emotion, inner-disposition, consequence, transformation, change, evolution

Puruṣārtha — correct efforts

Niyāmaka — controlling, governing

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

तत्समय-योग्यता की सच्ची समझ पुरुषार्थहीनता नहीं है।
सम्यक् पुरुषार्थ करने के बाद जो होता है उसे स्वीकार करना
ही तो तत्समय-योग्यता की सच्ची समझ है।
तत्समय-योग्यता के बहाने अपना सम्यक् पुरुषार्थ छोड़कर
उल्टा पुरुषार्थ करना अर्थात् संसार को पुरुषार्थ करना
मिथ्यात्व है।



Not making correct efforts is indicative of the non-comprehension of tatsamaya-yogyatā. A proper comprehension of tatsamaya-yogyatā means making the correct efforts and accepting with equanimity the results thereof. Using tatsamaya-yogyatā as an excuse to not make correct efforts, and instead making misguided efforts that lead to increased worldly bondage is a sign of false belief.

Puruṣārtha — efforts, correct efforts, appropriate efforts

Tatsamaya-yogyatā — preparedness of the moment

Mithyātva — false belief, which results in continual transmigration

Saṃsāra — vicious circle of transmigration

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम भगवान का जीवन-चरित्र अच्छे से पढ़ते हैं, उसे ठीक से याद भी रखते हैं। मगर बहुत कम लोग उनके मार्ग पर चलने का प्रयास करते हैं।



We gladly read the life stories of God. We also remember them correctly. But very few people attempt to walk in their footsteps.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

भगवान के उपदेश और जीवन से हमें बहुत कुछ सीखना चाहिये।



We must learn a great deal from the teachings and life of God.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

धन हमारे लिये आवश्यक हो सकता है लेकिन जब वह हमारे लिये एकमात्र लक्ष्य बन जाता है तब हमारा भविष्य अन्धकारमय बनना तय हो जाता है।



Money may be necessary but when it becomes the only purpose of our existence, our future is certain to be dark.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर हम जगत के हर सही या ग़लत काम करके धन कमाना चाहते हैं तो हमारा भविष्य अन्धकारमय बनना तय हो जाता है।



If we are willing to do anything to make money, whether wrong or right, our future is certain to be dark.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे लोग सुख समझते हैं वह सदैव आकुलतामय होता है।
सच्चा सुख तो निराकुल होता है।



That which people consider to be happiness
(sensual pleasure) is always fraught with anxiety.
True bliss is calm and serene.

Ākula — anxious, bewildered, confused, dismayed, uneasy
Nirākula — calm, serene, unconfused, clear, uncrowded

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग जिस इन्द्रियजनित सुख को ही सुख समझते हैं, वह पराधीन होता है। सच्चा सुख तो स्वाधीन होता है।



The sensual pleasure which people consider to be the only form of happiness is dependent on others. True bliss is independent of any external factors.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अपूर्व आनन्द, शाश्वत सुख और चिर शान्ति के लिये सत्य धर्म के अलावा और कोई मार्ग नहीं है। अर्थात् यह सब सत्य धर्म के ही फल हैं।



Unique joy, eternal bliss and long-lasting peace can only be attained by walking on the path of Satya Dharma. In other words, they are the fruits of Satya Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

निष्प्रयोजन जीवहिंसा हमें अन्धकारमय भविष्य देती है।
अतः निष्प्रयोजन जीवहिंसा का त्याग अवश्य करना
चाहिये।



Pointless violence results in a dark future. Hence,
one must necessarily renounce pointless violence.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम सब जानते हैं कि पत्ते पर गिरी ओस की बूँद अत्यन्त क्षणिक होती है। मगर यह समझ नहीं पाते कि हमारा जीवन भी उतना ही क्षणिक है। इसलिये हम अनादि से संसार में डूबे हुए हैं और मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाये।



All of us know that a dewdrop fallen on a leaf does not last very long. But we are unable to grasp that our life is just as fleeting. This is why have remained immersed in saṃsāra since beginningless time and have failed to attain liberation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

संसार के ज़्यादातर जीवों को एक के बाद एक इच्छा, आकांक्षा, तलब इत्यादि होती रहती हैं जिससे वे संसार से मुक्त होने की बात कभी सोच ही नहीं पाते।



Most people in this world experience an endless succession of desires, wants, demands, etc. Hence, they cannot even think of liberation from the cycle of transmigration.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अज्ञानी क्रूर कर्म करते हुए डरते नहीं क्योंकि उसका क्या फल होगा यह वे नहीं जानते या फिर उस बात में उन्हें विश्वास ही नहीं।



The foolish ones are not afraid of committing acts of cruelty. Either because they do not know the consequences thereof or because they do not believe that committing cruelty has certain consequences.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो साधक संसार का सच्चा स्वरूप जानता है वह अपने को
संसार में डूबने से बचा सकता है।



The seeker who realises the true nature of saṃsāra
can save himself from drowning in it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से विषयासक्ति के कारण इस संसार में अनन्त दुःख सहे हैं। अब कब तक यह सिलसिला जारी रखना है?
कृपया अपने पर दया करें।



Since beginningless time, we have suffered infinite misery and sorrow in this world because of our addiction to sensuous pleasure. How long do you wish to continue in this manner? Please have some pity on yourself.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से क्रोध, मान, माया और लोभ के कारण इस संसार में अनन्त दुःख सहे हैं। अब कब तक यह सिलसिला जारी रखना है? कृपया अपने पर दया करें।



Since beginningless time, we have suffered infinite misery and sorrow in this world because of our anger, arrogance, artifice and avarice. How long do you wish to continue in this manner? Please have some pity on yourself.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से विजातीय और सजातीय पात्रों से मोह के कारण इस संसार में अनन्त दुःख सहे हैं। अब कब तक यह सिलसिला जारी रखना है? कृपया अपने पर दया करें।



Since beginningless time, we have suffered infinite misery and sorrow in this world because of our attachment to people of the opposite gender and the same gender. How long do you wish to continue in this manner? Please have some pity on yourself.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जो ज्ञान और आत्मा के अविनाभावी सम्बन्ध को जानते हैं,
वे आत्मज्ञानी बन सकते हैं।



Those who realise the inherent relationship
between knowledge and the soul are capable of
attaining self-realisation.

Avinābhāvī — inherent

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

उचित ध्येयरहित धर्मक्रियाएँ ज़्यादा देर नहीं टिकतीं। न ही वे जीव को सत्य धर्म की ओर ले जाती हैं।



Religion rituals carried out without the appropriate purpose do not last long. Nor do they take you on the path of Satya Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

उचित भावरहित धर्मक्रियाएँ ज़्यादा देर नहीं टिकतीं। न ही वे जीव को सत्य धर्म की ओर ले जाती हैं।



Religious rituals carried out without the appropriate disposition do not last long. Nor do they take you on the path of Satya Dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बगैर अपने पूर्वाग्रहों को छोड़े हम कभी भी सत्य धर्म को
प्राप्त नहीं कर सकते।



We can never attain Satya Dharma without giving
up our preconceived notions.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म यानी स्वात्मानुभूति। वही सत्य धर्म उत्कृष्ट मंगल
है, उत्कृष्ट शरण है।



Satya Dharma means experiencing the true self
(self-realisation). This very Satya Dharma is
supremely auspicious and is the supreme shelter.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज्ञानियों ने साधना करके आत्मप्राप्ति की है। वे जगत कल्याण हेतु अपनी साधना सार्वजनिक करते हैं। जिससे अनेक लोग अपना कल्याण कर सकें।



The knowers made appropriate efforts to attain self-realisation. They share their insights for the welfare of the world so that many others may benefit.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम खाने को औषधरूप समझकर खाते हैं तब पाप का बन्ध कम और आत्मकल्याण ज़्यादा होता है। शरीर को साधन मानकर हम उसे खाना देकर सज्ज रखते हैं, जिससे हमारी आत्मसाधना में वह बिना व्यवधान के काम में आये।



When we eat food thinking of it as medicine, we bind less pāpa karmas and actually help the soul. We consider the body to be a means for us to carry out our ascetic practices and feed it to keep it fit and healthy so that we can carry out our spiritual endeavours without any obstruction.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

नये कर्मों का बन्ध कैसे रुक सकता है? अर्थात् संवर कैसे हो सकता है? कर्म दिखते नहीं, इसलिये उन्हें रोके पाना सम्भव नहीं। लेकिन जब हम अपना उपयोग अपनी आत्मानुभूति में लगाते हैं तब कर्म की कई प्रकृतियों का बन्ध अपने-आप रुक जाता है। इससे यह तय होता है कि अगर हमें कर्म के बन्ध को रोकना है तो हमें ज़्यादा से ज़्यादा स्वात्मानुभूति में रहने का प्रयास करना चाहिये। इसी को संवर कहते हैं।



How can we stop the bondage of new karmas? In other words, how can we achieve samvara? As karmas are invisible, it is impossible to stop them. But when we focus our awareness on experiencing the self, many types of karmic bondage come to a halt on their own. This indicates that if we wish to halt karmic bondage, we should try to experience the self for as long as possible. This is known as samvara.

Samvara — cessation of karmic inflow

Upayoga — focus of awareness

Karma prakṛti — types of karmas

Karma bandha — karmic bondage

Ātmānubhūti — the experience of the soul

Svātmānubhūti — the experience of the own soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दुःखों से मुक्ति के लिये कर्मों को हटाना है। उसे निर्जरा भी कहते हैं। हमें कर्मों को कुछ नहीं करना है क्योंकि वे तो दिखते ही नहीं। जब हम अपना उपयोग अपनी आत्मानुभूति में लगाते हैं तब कर्म की कई प्रकृतियों की निर्जरा शुरू हो जाती है। इससे यह तय होता है कि अगर हमें कर्म की निर्जरा करनी है तो हमें ज़्यादा से ज़्यादा स्वात्मानुभूति में रहने का प्रयास करना चाहिये।



We must shed karmas from the soul in order to gain freedom from sorrow. It is also known as nirjarā. We do not have to do anything to the karmas since they are invisible. When we focus our awareness on experiencing the soul (self), many types of karmas begin dissociating from the soul. This indicates that if we wish to shed karmas, we should try to experience the self for as long as possible.

Nirjarā — the shedding/dissociation of karmas from the soul

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्रों में स्वाध्याय को कर्मों की निर्जरा हेतु अभ्यन्तर तप के रूप में दर्शाया गया है। ज्यादातर लोग धर्मग्रन्थों के पठन-पाठन को स्वाध्याय समझते हैं। परन्तु स्वाध्याय का सही अर्थ है धर्मग्रन्थों को आईना बनाकर अपनी आत्मा का अनुभव करते हुए धर्मग्रन्थों में बताये गये गुणों को ग्रहण करना और अपने दोषों से निजात पाना। ऐसा स्वाध्याय सच्ची निर्जरा का कारण है।



It has been conveyed that studying the scriptures comprises the internal penance known as svādhyāya. Most people think that svādhyāya means reading or studying the scriptures. But the true meaning of svādhyāya is — using the scriptures as a mirror to experience the soul (self), imbibing the good qualities taught in the scriptures and getting rid of one's flaws. Such svādhyāya is the cause of true/effective nirjarā.

Svādhyāya — study of the self, reading and reflecting on the scriptures and using them as a mirror to experience the soul, imbibe good qualities and get rid of flaws.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका



शास्त्रों में ध्यान को कर्मों की निर्जरा हेतु अभ्यन्तर तप के रूप में दर्शाया गया है। ज़्यादातर लोग ध्यान का अर्थ आसन लगाकर स्थिर बैठकर अपनी साँस या बिन्द या क्रिस्टल ऐसे कोई भी आलम्बन पर ध्यान लगाना ऐसा समझते और करते हैं। परन्तु ध्यान का सही अर्थ यह है कि सोते-जागते, चलते हुए या बैठकर, किसी भी मुद्रा में आत्मा को केन्द्र में रखकर और आत्मप्राप्ति के लिये कर्मविपाक, संसारस्वरूप, लोकस्वरूप, इत्यादि के बारे में चिन्तन करना या फिर अपनी आत्मा का अनुभव करते रहना और बीच-बीच में पूर्वोक्त चिन्तन करना। ऐसा ध्यान सच्ची निर्जरा का कारण है।

सत्य धर्म प्रवेशिका



The scriptures state that dhyāna is an internal penance. For most people, dhyāna means sitting still in one position and focusing on an element like your breath, or a given point, or a crystal. So this is what most people do when they try to practise dhyāna. But the real meaning of dhyāna is reflecting on the consequences of karma, the nature of the temporal world, the nature of the universe, etc. from the perspective of the true self and to achieve self realisation, irrespective of whether you are sleeping or awake, while walking or while sitting. Dhyāna can also be experiencing the self again and again and in between reflecting on karma, the nature of the world, the nature of the universe, etc. Such dhyāna is the cause of true/effective nirjarā.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग कभी-कभी इन्द्रियों को दुश्मन के रूप में पेश कर देते हैं। मगर सच्चा दुश्मन तो अपना मोहग्रस्त मन है जो उन इन्द्रिय-विषयों के प्रति मोहवश आकर्षित होकर हमें (आत्मा को) संसार में भटकाता है। इसलिये कह सकते हैं कि सच्चा दुश्मन मोह है, न कि इन्द्रियाँ।



Sometimes, people portray indriyas as our enemies. But the deluded mind is the real enemy because its cravings for sensual pleasure cause our (the soul's) wanderings in saṃsāra. Hence, we can state that delusion is our true enemy, not the senses.

Indriya — the five senses of touch, taste, smell, hearing and seeing. It can also mean the organs which facilitate the five senses.

Moha — delusion

Saṃsāra — vicious circle of transmigration

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब कोई जीव सम्यग्दर्शन पाकर दूसरों को उसके लिये प्रोत्साहित करता है, मदद करता है तब वह सम्यग्दृष्टि जीव दूसरों पर अनन्त उपकार करता है। क्योंकि स्वात्मानर्भेति-रूपी सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के बाद वह दूसरा जीव भी निश्चित ही अल्पकाल में ही सिद्धत्व को प्राप्त कर लेगा, जो कि ब्रह्माण्ड में सबसे बड़ी उपलब्धि है।



When a person attains samyagdarśana himself and then encourages and helps others in attaining samyagdarśana, he is bestowing infinite favours upon them. Because when the others also attain samyagdarśana in the form of self-realisation, they too will certainly attain liberation in a short time span. And liberation is the supreme achievement in the universe.

Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight, self-realisation
Siddhatva — the state of liberation, where the soul is freed from the vicious circle of transmigration and exists forever in a state of infinite bliss and beatitude

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम किसी लौकिक दृष्टि से सफल व्यक्ति की बात करते हैं, तब अधिकांश लोग उस व्यक्ति के समान सफल बनने की कामना करते हैं। ठीक वैसे ही, जब हम भगवान की स्तुति, प्रार्थना या पूजा करते हैं तब हमें उनके जैसा बनने का विचार करना चाहिये।



When we talk about a person who is successful in worldly terms, most people think about becoming as successful as he is. In the same manner, when we praise, worship and adore God, we should think about becoming like Him.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोग नौ तत्वों के प्रति श्रद्धा को ही सम्यग्दर्शन समझते हैं। लेकिन सही सम्यग्दर्शन तो स्वात्मानुभूति सहित ही होता है। स्वात्मानुभूति ही सत्य है, स्वात्मानुभूति ही सम्यग्दर्शन है, स्वात्मानुभूति ही सत्य धर्म है।



Most people think that samyagdarśana means having firm conviction in the nine aspects of reality but real samyagdarśana is always concomitant with self-realisation. Only self-realisation is the truth. Only self-realisation is samyagdarśana. Only self-realisation is the Satya Dharma.

Nine tattvas — nine aspects of reality

Samyagdarśana/Samyaktva — enlightened perception, true insight, self-realisation

Satya Dharma — code of existence based on self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब कोई जीव ब्रह्माण्ड के नियम (Universal Law) समझ लेता है, तब वह हर हाल में खुश रहना सीख जाता है। यदि कोई दुःख आ भी जाय तो वह ज़्यादा देर तक दुःखी नहीं रहता।



When someone understands the Universal Law, he learns how to be happy in all circumstances. Even if a sorrowful situation arises, he does not stay sad for a long time.

To know the Universal Law, please refer to www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम अनादि से दुःख झेलते आये हैं और जब तक अपने आप को पहचान नहीं लेते अर्थात् आत्मज्ञान नहीं कर लेते, तब तक हमें दुःखी होने से कोई बचा नहीं सकता।



Since beginningless time, we have been suffering from sorrow and until we recognise who we are (attain self-realisation), no one can save us from sorrow.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मज्ञान पाने के लिये आत्मज्ञानी का विनय करना परम आवश्यक है। उस विनय से ज्ञानी का नहीं अपना भला होता है, उस विनय से अपने अहंकार का नाश होता है जिससे हम आत्मज्ञान के पात्र बनते हैं।



To attain self-realisation, it is imperative that we respect the self-realised one. Respecting him will not help him, but it will help destroy our arrogance, thus enabling us to become worthy of self-realisation.

Ātmajñāna — self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग भगवान की भक्ति के फल में उनसे कुछ न कुछ कामना या याचना करते हैं। परन्तु सही भक्ति कोई कामना या याचना के लिये नहीं बल्कि अपने आत्मकल्याण के लिये ही होती है।



People implore or expect something from God in return for worshipping him. But true worship is not out of any expectation. It should be only for the benefit of the soul.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इन्द्रिय विषयों की कामना संसार के मूल को हरा-भरा रखती है, उसे सूखने नहीं देती। जिससे हमें अत्यन्त अल्प भ्रामक सुख के बदले में अनन्तानन्त काल का अनन्त दुःख मिलता है।



Desires for sensual pleasure strengthens our ties to the root cause of saṃsāra, it does not allow it to dry up (weaken) the bonds. Consequently, we attain an extremely tiny iota of mistaken happiness which causes infinite sorrow for an infinite time.

Indriya — the five senses of touch, taste, smell, hearing and seeing. It can also mean the organs which facilitate the five senses.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

लोग सहनशीलता बढ़ाने का प्रयास करते हैं लेकिन वह भी एक सीमा तक ही बढ़ती है। वह बोझ भी होती है। जो जीव “धन्यवाद! स्वागतम्!” (Thank you! Welcome!) समझ लेता है उसकी सहनशीलता अपने-आप ही बढ़ती जाती है। वह सहज होती है, बोझ नहीं होती।



People try to increase their tolerance but there is a limit to how much it can be increased. Also, such tolerance can be a burden. However, the tolerance of one who understands the concept of “Thank you! Welcome!” increases effortlessly. It is spontaneous, not a burden.

To know “Thank you! Welcome!”, please refer to www.jayeshsheth.com

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सच्चे धर्म में धर्म के नाम पर आपस में झगड़े-फ़साद नहीं हुआ करते। यह सच्चे धर्म की पहचान है।



True dharma shall never be the cause of fights and quarrels. This is the identifier for true dharma.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से अपनी सोच बना रखी है कि बगैर क्रोध किये अपना काम नहीं होगा या अपनी बात सुनी नहीं जायेगी। हमें इस मानसिकता से बाहर निकलने का प्रयास करना चाहिये।



Since beginningless infinite time, we have created a mindset that we cannot get our work done or get others to listen to us without getting angry. We must try to get out of this mindset.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि हम यह सोच बनाये रखते हैं कि बगैर क्रोध किये अपना काम नहीं होगा या अपनी बात नहीं सुनी जायेगी तो हमारा संसार में अनन्त काल तक अनन्त दुःखी होना तय हैं।



If we maintain the mindset that we cannot get our work done or get others to listen to us without getting angry then we are certain to experience infinite sorrow for an infinite time in transmigration.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि हम यह सोच बनाये रखते हैं कि बगैर क्रोध किये अपना काम नहीं होगा या अपनी बात नहीं सुनी जायेगी तब हम सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) के योग्य बनने से वंचित रह जाते हैं।



If we maintain the mindset that we cannot get our work done or get others to listen to us without getting angry then we deprive ourselves from qualifying for samyagdarśana.

Samyagdarśana — enlightened perception, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे इस संसार में ही सुख दिखता है और उससे मुक्त होने का भाव नहीं होता, उसका संसार में अनन्त काल तक अनन्त दुःखी होना तय है।



One who believes happiness is only present in the temporal world and is not motivated to attain liberation is certain to experience infinite sorrow for an infinite time in transmigration.

Bhāva — mental disposition, emotion, intent

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिसे इस संसार में ही सुख दिखता है और उससे मुक्त होने का भाव नहीं होता, वह सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) के लिये योग्य बन ही नहीं पाता। अतः उसका अनन्त काल तक संसार में भटकना तय है। अनन्त काल तक अनन्त दुःखी होना तय है।



One who believes happiness is only present in the temporal world and is not motivated to attain liberation, cannot qualify for samyagdarśana.

Hence, he is certain to spend an infinity in transmigration experiencing infinite sorrow for an infinite time.

Bhāva — mental disposition, emotion, intent
Samyagdarśana — enlightened perception, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज़्यादातर लोगों में संसार से मुक्त होने का भाव ही दुर्लभ है।
इसलिये वे सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) के योग्य नहीं बन पाते।
अतः उनका अनन्त काल तक संसार में भटकना तय है।
अनन्त काल तक अनन्त दुःखी होना तय है।



The desire to attain liberation from the cycle of transmigration is rarely present in most people. Hence, they do not qualify for samyagdarśana (self-realisation). Therefore, they are certain to spend an infinity in transmigration experiencing infinite sorrow for an infinite time.

Bhāva — mental disposition, emotion, intent
Samyagdarśana — enlightened perception, self-realisation

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम संसार के स्वरूप का शास्त्रों के आधार से और अपने रोजमर्रा के अनुभव से विश्लेषण करेंगे तब हमें संसार से मुक्त होने का भाव आ सकता है। इसी को वैराग्य कहते हैं। इसी को निर्वेद कहते हैं।



On analysing the true nature of the world on the basis of the scriptures and our own day-to-day experiences, we may develop the intent to attain liberation. This is known as vairāgya. This itself is known as nirveda.

Vairāgya — disinclination towards the material world and its entrapments, and inclination for liberation
Nirveda — disregard of worldly objects, and regard for liberation
Bhāva — mental disposition, emotion, intent

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हमें संसार के स्वरूप का शास्त्रों के आधार से और अपने रोजमर्रा के अनुभव से विश्लेषण करने से संसार से मुक्त होने का भाव आता है। हमें मुक्ति (मोक्ष) के प्रति आकर्षण होता है। इसी को सँवेग कहते हैं।



On analysing the true nature of the world on the basis of the scriptures and our own day-to-day experiences, we develop the intent to attain liberation. We are drawn towards attaining liberation. This is known as samvega.

Samvega — desire for emancipation
Bhāva — mental disposition, emotion, intent

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

किसी साधक के मन में यह प्रश्न उठता है कि मुझे सम्यग्दर्शन (आत्मज्ञान) कब होगा? या अब मेरे मोक्ष जाने से पहले कितने भव शेष हैं, इत्यादि। उनसे हमारा निवेदन है कि आप बिना चिन्ता किये एकमात्र मोक्ष के लक्ष्य से चिन्तन करें और भरपूर पुरुषार्थ करें। इतना ही काफी है। क्योंकि चिन्ता करने से तौ आर्तध्यान (पाप) होता है और वह मोक्षमार्ग है भी नहीं।



The question might arise in some seeker's mind as to when he would attain samyagdarśana (self-realisation). Or he might wonder how many births he would have to take before attaining liberation. We request such seekers to sincerely make abundant efforts to contemplate on the true self, focusing only on attaining liberation without worrying about it, that is enough. As worrying results in āṛta dhyāna (pāpa). Besides, worrying is not the path of liberation.

Sādhaka — seeker
Samyagdarśana — enlightened perception, self-realisation
Puruṣārtha — efforts
Āṛta Dhyāna — saturnine/mournful reflection

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

यदि हम असावधान रहते हैं तो पुराने संस्कारों के कारण सहज ही संसार में फँस जायें ऐसे विचार आना स्वाभाविक है। इसलिये सदा सावधान रहकर एकमात्र मोक्ष के लक्ष्य से आत्मचिन्तन और आत्मानुभव करते रहना चाहिये।



If we are not vigilant about our thoughts, due to our past saṃskāras, they can easily take a turn that entraps us in saṃsāra. Hence, we must always be alert, contemplate only on the true self and try to experience the true self with only the intent to get liberated.

Saṃskāra — conditioning, mental impression, forming the mind, normative values

Sahaja — effortless, spontaneous

Saṃsāra — vicious circle of transmigration

Sāvadhāna — vigilant, careful, alert

Ātmacintana — contemplating on the soul/true self

Atmānubhava — experiencing the soul/true self

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मज्ञानी कर्मों के उदय को सहज रीति से ले सकते हैं। प्रायः (ज़्यादातर) कर्मों के उदय में आने पर वे दःखी नहीं होते। क्योंकि उन्हें दृढ़ विश्वास है कि यह उदय मेरे पुराने कर्मों का ही फल है। अर्थात् मैं ही उसके लिये ज़िम्मेदार हूँ।



Those who know the true self can remain unperturbed in the face of karmic fallout. Most of the time, they are not upset by the rise of adverse karmas because they are deeply convinced that any adversity is the result of their own past karmas.

Hence, they realise that they themselves are responsible for the circumstances.

Ātmajñāna — knowing the self, self-realisation

मैत्री भावना

- सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना

- उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना

- अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना

- विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

- मुखपृष्ठ की समझ -

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।